Topic 91 तृतीया विभक्ति ।

स्वतंत्रः कर्ता ।

क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् ।

क्रिया में स्वतंत्रता से विवक्षित अर्थ कर्ता हो । स्थाली पचति । काष्ठानि पचन्ति । एवं स्थाल्या पच्यते इत्यादि प्रयोग देखने से क्रिया करने में कर्ता की स्वतंत्रता की विवक्षा दृष्टिगोचर होती है ।

साधकतमं करणम् ।

क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणसंज्ञं स्यात् । तमब्ग्रहणं किम् ? गंगायां घोषः ।

क्रिया की सिद्धि में जो कुछ अति उपकारक हो वह कारक करणसंज्ञक हो । इस अधिकार तमब्ग्रहणं किम् ? कारक इस क्रियते हि तथा करणार्थक ल्युट् प्रत्यय । क्रियते साधकत्व अनेनेति करणम् । इस महासंज्ञा से तमब्ग्रहणं किम् अर्थ तो लब्ध हो ही जायेगा । गंगायां घोषः । आधिक्रियते आश्रिय इति । उत्तर देता है - गंगायां इति अधिकरणम् ।

कर्तृकरणयोस्तृतीया ।

रामेण बाणेन हतो वाली ।

रामेण बाणेन में तृतीया हो । अनुक्तकर्ता और अनुक्तकरण में तृतीया । अतः 'रामेण' इस अनुक्त कर्ता में तथा बाणेन इस अनुक्तकरण में तृतीया होती है । यहाँ हनन क्रिया का साक्षात् वाच्य न तो राम कर्ता है और नहीं बाण करण ही, अपितु हनन क्रिया कर्म में ...

राम के द्वारा बाणरूप साधन से बाली हत हुआ।

प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वा०)

प्रकृत्या चारुः। प्रायेण याज्ञिकः। गोत्रेण गार्ग्यः। समेनैति। विषमेणैति। द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति। सुखेन दुःखेन वा यातीत्यादि॥

प्रकृति आदि शब्दों से तृतीया का उपसंख्यान है। इन प्रकृति आदि शब्दों में करणत्व नहीं है, अपितु व्यवहार से तृतीया का विधान है। प्रकृत्या चारुः = स्वभाव से सुन्दर है। प्रायेण याज्ञिकः = प्रायः करके याज्ञिक है। गोत्रेण गार्ग्यः। वह गोत्र से गार्ग्य है। समेनैति = समभाग से जाता है। विषमेणैति = विषमभाग से जाता है। द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति - दो द्रोणमाप से धान्य खरीदता है। सुखेन दुःखेन वा यातीत्यादि। समय सुख या दुःख से बीतता है इत्यादि। इसी प्रकार स्वभावेन सरलः दृष्ट्या स कुशली भाति = वह दृष्टि से चतुर मालूम होता है।

आकृत्या लक्ष्मणो गुणी साधुः गोत्रेण कर्मणाऽपि तथा याज्ञिकः। नाम्ना दीनदयालुः सः। सुखेन याति कालस्ते दुःखेन तु सदैव मम।

यहाँ आकृत्या आदि तृतीयान्त पदों में उपर्युक्त वार्तिक से तृतीया होती है।

दिवः कर्म च।

दिवः साधकतमं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् चात् करणसंज्ञम्। अक्षैरक्षान् वा दीव्यति।

दिव् धातु का ~~साधकतम~~ साधकतम कारक कर्मसंज्ञक हो। चकार से करणसंज्ञक भी हो।

उपर्युक्त उदाहरण में अक्षैः यह करण तृतीया है।
'अक्षान्' यह कर्म - द्वितीया भी है। अक्ष = पासा।
दीव्यति = खेलता है। पासों से खेलता है। यह व्यवहार
का अर्थ है। इसी प्रकार गुटिकाभिः दीव्यति गुटिका
या दीव्यति यह प्रयोग भी जानने योग्य है।
तथा यवैः यजति या दीव्यति प्रयोग भी।

अपवर्गे तृतीया।

अपवर्गः फलप्राप्तिस्तस्यां द्योत्यायां कालाध्व-
नोरत्यन्तसंयोगे तृतीया स्यात्। अह्ना क्रोशेन ~~~~
वाऽनुवाकोऽधीतः। अपवर्गे किम् ? मासमधीतो
नायातः।

अपवर्ग का अर्थ है क्रिया के फल
की प्राप्ति, उसके द्योत्य होने पर काल और
मार्ग वाचक शब्द से तृतीया हो यदि क्रिया
का अत्यन्त संयोग हो। अह्ना क्रोशेन वा
इत्यादि उदाहरण का अर्थ है अह्ना - दिन भर में
या कोस भर चलते अनुवाक पढ़कर हृदयंगम
कर लिया। 'अपवर्गे' शब्द का ग्रहण सूत्र में
क्यों किया। उत्तर देता है - मासमधीतो नायातः।
अनुवाक महीने भर पढ़ा, पर आया नहीं, हृदयंगम
नहीं हुआ। यहाँ फल - प्राप्ति न होने से तृतीया
नहीं होती, अपितु 'कालाध्वनोः इत्यादि सूत्र
से मासम् - यह द्वितीया होती है।